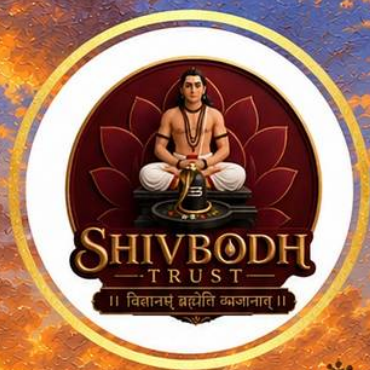
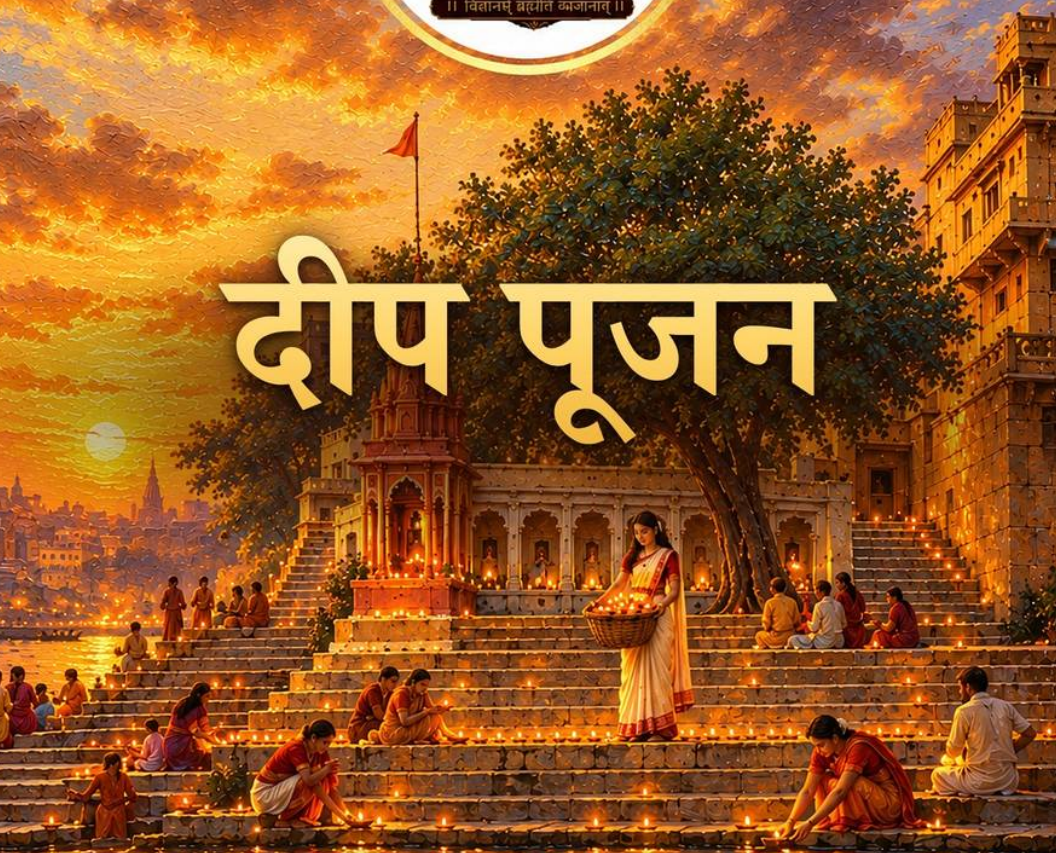




# दीप पूजन



दीपक का महत्त्व, नित्य पूजन, कार्तिक दीपदान  
एवं लक्षवर्तिका व्रत-विधि

श्री शिवबोध जी

SHIVBODH TRUST

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

# दीप पूजन

दीपक का महत्त्व, नित्य पूजन, कार्तिक दीपदान  
एवं लक्षवर्तिका व्रत-विधि

गृहस्थ के लिए सरल दीप-उपासना, देवता एवं अवसर के अनुसार दीप,  
कार्तिक मास का दीपदान, पौराणिक कथाएँ तथा  
श्री लक्षवर्तिका व्रत की पूजा-पद्धति एवं परंपरागत व्रत-कथा  
(मूल संस्कृत, हिंदी अर्थ एवं स्रोत-टिप्पणियों सहित)

लेखक

श्री शिवबोध जी

SHIVBODH TRUST

# दीप पूजन

दीपक का महत्त्व, नित्य पूजन, कार्तिक दीपदान एवं लक्षवर्तिका व्रत-विधि

|                   |                                                                                                                                        |
|-------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| लेखक              | श्री शिवबोध जी                                                                                                                         |
| प्रकाशक           | ShivBodh Trust, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), भारत                                                                                           |
| संस्करण           | प्रथम संस्करण (ई-पुस्तक), 2026                                                                                                         |
| भाषा              | संस्कृत एवं हिंदी                                                                                                                      |
| प्रकाशन-तिथि      | 19 अक्टूबर 2026, सोमवार                                                                                                                |
| संवत्             | विक्रम संवत् 2083                                                                                                                      |
| मास, पक्ष, तिथि   | आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी (वाराणसी में सूर्योदयकालीन तिथि);<br>शारदीय नवरात्र की महाअष्टमी                                        |
| वेबसाइट           | <a href="https://shivbodhtrust.org">https://shivbodhtrust.org</a>                                                                      |
| ई-मेल             | <a href="mailto:om@shivbodhtrust.org">om@shivbodhtrust.org</a><br><a href="mailto:shivbodhtrust@gmail.com">shivbodhtrust@gmail.com</a> |
| फ़ोन एवं WhatsApp | +91 88588 85319                                                                                                                        |

---

E-Book in Sanskrit and Hindi (2026)

Publisher : ShivBodh Trust · First Edition : 2026

**ShivBodh Trust © 2026. All Rights Reserved.**



---

© 2026 ShivBodh Trust. सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में — मुद्रित, इलेक्ट्रॉनिक, फोटोप्रति अथवा अन्य किसी माध्यम से — पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता। समीक्षा अथवा अध्ययन हेतु स्रोत का उल्लेख करते हुए संक्षिप्त उद्धरण दिए जा सकते हैं।

इस पुस्तक में दिए गए मंत्र, विधि एवं कथा शास्त्रीय परंपरा पर आधारित हैं। किसी भी अनुष्ठान को करने से पूर्व योग्य आचार्य का मार्गदर्शन लेना उचित है। पौराणिक फलश्रुतियाँ श्रद्धा और परंपरा का अंग हैं; इन्हें चिकित्सा, आर्थिक अथवा अन्य व्यावसायिक परामर्श का विकल्प न मानें।

पुस्तक के सभी छायाचित्र : © ShivBodh Trust।

टाइपफेस : Noto Serif Devanagari, Tiro Devanagari Sanskrit एवं Cinzel (SIL Open Font License 1.1)।

## समर्पण

---

मैं सभी के अंदर जल रही परमात्म-ज्योति को यह पुस्तक अर्पित  
करता हूँ।

— श्री शिवबोध जी

# भूमिका

भारतीय घरों में दीपक सबसे परिचित पूजा-सामग्री है। संध्या होते ही तुलसी के पास, देवस्थान में या द्वार पर एक छोटा-सा दीप जलाना करोड़ों परिवारों की दिनचर्या है। फिर भी बहुत-से श्रद्धालु पूछते हैं — दीप क्यों जलाते हैं? घी लें या तेल? कितनी बत्तियाँ हों? कार्तिक मास में दीपदान का क्या विधान है? और लक्षवर्तिका जैसा बड़ा व्रत कैसे किया जाता है? यह पुस्तक इन्हीं प्रश्नों का उत्तर एक स्थान पर देने का प्रयास है।

## पुस्तक का उद्देश्य

इस पुस्तक के दो लक्ष्य हैं। पहला, सामान्य श्रद्धालु को दीप-उपासना की सरल, स्पष्ट और प्रामाणिक जानकारी देना, जिससे वह घर में प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक दीप जला सके। दूसरा, गंभीर साधक के लिए श्री लक्षवर्तिका व्रत की पूजा-पद्धति और वामनपुराण से संबद्ध मानी जाने वाली परंपरागत लक्षवर्तिका कथा को मूल संस्कृत, हिंदी अर्थ और आवश्यक टिप्पणियों सहित सुरक्षित रखना।

## यह पुस्तक किसके लिए है?

- वे गृहस्थ, जो प्रतिदिन घर में दीप जलाते हैं और इसका अर्थ तथा सही विधि जानना चाहते हैं।
- वे श्रद्धालु, जो कार्तिक मास, दीपावली अथवा अन्य पर्वों पर दीपदान करते हैं।
- वे साधक, जो आचार्य के मार्गदर्शन में श्री लक्षवर्तिका व्रत और उसका उद्यापन करना चाहते हैं।

- पुरोहित, अध्येता और वे सभी पाठक, जो दीप-परंपरा को उसके मूल ग्रंथों के साथ समझना चाहते हैं।

## इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें?

---

पुस्तक तीन खंडों में व्यवस्थित है। **अध्याय 1 से 5** गृहस्थ के लिए हैं — दीप का महत्त्व, घी-तेल और बत्ती का चयन, देवता के अनुसार दीप, घर का नित्य दीप-पूजन तथा दीपदान की सामान्य जानकारी। यदि आप पहली बार यह विषय पढ़ रहे हैं, तो यहीं से आरंभ करें; अध्याय 4 की एक पृष्ठ की पूजा-पत्रिका दैनिक उपयोग के लिए है। **अध्याय 6 और 7** कार्तिक मास के दीपदान, आकाशदीप, तुलसी-दीप, पितृ-दीप और उनसे जुड़ी पौराणिक कथाओं पर हैं। **अध्याय 8 से 10** श्री लक्षवर्तिका व्रत के हैं — पहले उसका परिचय और गणना, फिर पूजा-विधि, और अंत में मूल संस्कृत कथा। यह विस्तृत अनुष्ठान है; इसे आचार्य के मार्गदर्शन में ही करें। **परिशिष्ट** में सामग्री-सूचियाँ, मंत्र-संग्रह, आरती, प्रश्नोत्तर, शब्दावली और पुरानी माप-इकाइयाँ दी गई हैं; पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर सन्दर्भ-ग्रन्थों की सूची है।

## पाठ-प्रस्तुति के संकेत

---

- **मूल संस्कृत** — गहरे रंग में, प्रायः मध्य में रखे श्लोक।
- **हिंदी अनुवाद / भावार्थ** — मूल के ठीक नीचे; कथा में विस्तृत हिंदी अर्थ को भावार्थ कहा गया है।
- **टिप्पणी** — बाई ओर रेखा वाले छोटे अक्षरों के अनुच्छेद; इनमें शब्दार्थ, गणना अथवा पाठ-संबंधी सूचना है।
- **विशेष टिप्पणी** — बॉक्स में दी गई व्याख्या; यह मूल ग्रंथ का भाग नहीं है।

- **आधार** — प्रत्येक नियम के साथ यथासंभव बताया गया है कि वह **पुराण-वचन** है, **पूजा-पद्धति** का नियम है या **लोक-परंपरा**। जहाँ ग्रंथ का अध्याय-श्लोक निश्चित रूप से ज्ञात है, वहाँ वह दिया गया है।

## फलश्रुति के प्रति दृष्टि

---

पुराणों में दीपदान के बड़े-बड़े फल बताए गए हैं — पापों का नाश, यम-भय से मुक्ति, विष्णुलोक की प्राप्ति। ये फलश्रुतियाँ श्रद्धा को जगाने और सत्कर्म में प्रवृत्त करने के लिए हैं। इस पुस्तक में उन्हें मूल के अनुसार ही रखा गया है, किंतु किसी रोग, आर्थिक संकट अथवा ग्रह-बाधा के निश्चित निवारण का आश्वासन नहीं दिया गया है। दीप-उपासना मन को शांत, एकाग्र और कृतज्ञ बनाती है; जीवन की समस्याओं के लिए उचित चिकित्सा, परिश्रम और विवेक का अपना स्थान है।

दीप की ज्योति हमें याद दिलाती है कि जो प्रकाश बाहर जलता है, वही प्रकाश प्रत्येक प्राणी के भीतर भी है। आशा है, यह पुस्तक पाठकों के घर और मन दोनों को आलोकित करेगी।

— प्रकाशक, ShivBodh Trust

# अनुक्रमणिका

|                                                                       |    |
|-----------------------------------------------------------------------|----|
| भूमिका . . . . .                                                      | 5  |
| अध्याय 1 : दीपक का आध्यात्मिक महत्त्व : हम दीप क्यों जलाते हैं? . . . | 12 |
| 1. प्रकाश : अंधकार से उजाले की ओर . . . . .                           | 13 |
| 2. ज्ञान : भीतर का दीप . . . . .                                      | 13 |
| 3. एकाग्रता : स्थिर लौ, स्थिर मन . . . . .                            | 14 |
| 4. भक्ति और समर्पण . . . . .                                          | 14 |
| 5. दीप-ज्योति को प्रणाम . . . . .                                     | 15 |
| दीप जलाने से क्या होता है? . . . . .                                  | 15 |
| अध्याय 2 : दीपक, घी-तेल और बत्ती : सामग्री एवं चयन . . . . .          | 18 |
| दीप-पात्र . . . . .                                                   | 18 |
| घी या तेल? . . . . .                                                  | 19 |
| बत्ती (वर्तिका) . . . . .                                             | 21 |
| दीप का आसन : भूमि पर सीधे न रखें . . . . .                            | 22 |
| दिशा और स्थान . . . . .                                               | 23 |
| समय . . . . .                                                         | 23 |
| अध्याय 3 : देवता और अवसर के अनुसार दीप . . . . .                      | 24 |
| देवता-दीप तालिका . . . . .                                            | 25 |
| अवसर के अनुसार दीप : संक्षेप में . . . . .                            | 26 |
| अध्याय 4 : घर में नित्य दीप पूजन : क्रमबद्ध सरल विधि . . . . .        | 27 |
| 1. सामग्री और तैयारी . . . . .                                        | 28 |
| 2. पवित्रीकरण और आचमन . . . . .                                       | 29 |

|                                           |    |
|-------------------------------------------|----|
| 3. सरल संकल्प . . . . .                   | 29 |
| 4. दीप-प्रज्वलन और दीप-पूजन . . . . .     | 30 |
| 5. दीप-प्रणाम . . . . .                   | 30 |
| 6. भगवान को दीप अर्पण . . . . .           | 30 |
| 7. प्रार्थना और आरती . . . . .            | 31 |
| 8. क्षमा-प्रार्थना और समापन . . . . .     | 32 |
| घर में दीप जलाते समय सावधानियाँ . . . . . | 32 |

## **अध्याय 5 : दीपदान : अर्थ, स्थान, समय और प्रकार . . . . . 33**

|                                                   |    |
|---------------------------------------------------|----|
| दीपदान क्या है? . . . . .                         | 33 |
| आरती, दीप-पूजन और दीपदान में अंतर . . . . .       | 33 |
| दीपदान कहाँ करते हैं? . . . . .                   | 34 |
| दीपदान कैसे करते हैं? . . . . .                   | 35 |
| दीपदान कब करते हैं? . . . . .                     | 36 |
| दीपदान के फल : परंपरागत मान्यताएँ . . . . .       | 37 |
| दीपदान की सरल विधि . . . . .                      | 38 |
| नदी-तट पर दीपदान : स्वच्छता एवं सुरक्षा . . . . . | 39 |

## **अध्याय 6 : कार्तिक मास : दीपदान, आकाशदीप, तुलसी-दीप और पितृ-दीप**

|                                                       |    |
|-------------------------------------------------------|----|
| . . . . .                                             | 41 |
| कार्तिक : दीपों का मास . . . . .                      | 41 |
| पूरे मास का दीपदान . . . . .                          | 42 |
| कार्तिक मास का दीपदान : समस्त तीर्थों का फल . . . . . | 42 |
| शिवजी के सम्मुख दीप . . . . .                         | 43 |
| तुलसी-दीप . . . . .                                   | 43 |
| दामोदर-पूजन . . . . .                                 | 44 |
| आकाशदीप . . . . .                                     | 45 |
| पितृ-दीप . . . . .                                    | 46 |
| दीपोत्सव के पाँच दिन . . . . .                        | 47 |
| प्रबोधिनी एकादशी . . . . .                            | 49 |

|                                                                                  |           |
|----------------------------------------------------------------------------------|-----------|
| कार्तिक पूर्णिमा : देव दीपावली . . . . .                                         | 49        |
| कार्तिक दीपदान की प्रमुख तिथियाँ . . . . .                                       | 50        |
| <b>अध्याय 7 : दीपदान की पौराणिक महिमा : चुनी हुई कथाएँ . . . . .</b>             | <b>51</b> |
| 1. दीप की लौ बढ़ाने वाला चूहा . . . . .                                          | 51        |
| 2. कुत्स मुनि का उपदेश और पश्चात्ताप का दीप . . . . .                            | 52        |
| 3. आकाशदीप की कथा : व्याध, गिद्ध और बिल्ली . . . . .                             | 53        |
| 4. दूसरों के दीप को सँभालना . . . . .                                            | 54        |
| कथाओं का सार . . . . .                                                           | 54        |
| <b>अध्याय 8 : श्री लक्षवर्तिका व्रत : परिचय, गणना एवं उद्यापन-क्रम . . . . .</b> | <b>56</b> |
| लक्षवर्तिका का अर्थ . . . . .                                                    | 56        |
| स्रोत एवं परंपरा . . . . .                                                       | 57        |
| यह व्रत कौन कर सकता है? . . . . .                                                | 57        |
| व्रत की अवधि . . . . .                                                           | 57        |
| लक्ष और सवा लाख . . . . .                                                        | 58        |
| दशांश की गणना . . . . .                                                          | 58        |
| प्रतिदिन हजार बत्तियाँ और कुल संख्या . . . . .                                   | 59        |
| उद्यापन का क्रम : एक दृष्टि में . . . . .                                        | 59        |
| कथा में आई माप-इकाइयाँ . . . . .                                                 | 60        |
| <b>अध्याय 9 : श्री लक्षवर्तिका दीपदान : पूजा-विधि . . . . .</b>                  | <b>61</b> |
| प्रारंभिक क्रिया एवं संकल्प . . . . .                                            | 62        |
| कलश, गणेश एवं त्रिदेव पूजन . . . . .                                             | 63        |
| पुरुषसूक्त से उपचार-पूजन (षोडशोपचार) . . . . .                                   | 65        |
| अंग-पूजा . . . . .                                                               | 68        |
| अथ दीपदानसंकल्पः . . . . .                                                       | 70        |
| अथ कांस्यपात्र-रौप्यपात्र-हेमवर्तिकादानमन्त्रः . . . . .                         | 71        |
| समर्पण एवं विसर्जन . . . . .                                                     | 71        |
| <b>अध्याय 10 : श्री लक्षवर्तिका व्रत-कथा . . . . .</b>                           | <b>73</b> |

|                                                   |    |
|---------------------------------------------------|----|
| लक्षणा का शोक (श्लोक 1-9)                         | 74 |
| याजक मुनि से प्रश्न (श्लोक 10-16)                 | 76 |
| वैधव्य-दोष के कारण (श्लोक 17-26)                  | 78 |
| निवारण के उपाय (श्लोक 27-33)                      | 80 |
| व्रत का काल (श्लोक 34-39)                         | 82 |
| उद्यापन-विधि (श्लोक 40-47)                        | 83 |
| विष्णु-पूजा का विस्तार (श्लोक 48-50)              | 85 |
| अंग-पूजा का क्रम (श्लोक 51-52)                    | 86 |
| धूप, दीप, नैवेद्य (श्लोक 53-56)                   | 87 |
| लक्षपूजा का फल और आचार्य-पूजा (श्लोक 57-59)       | 88 |
| कांस्यपात्र-दान की वैकल्पिक विधि (श्लोक 60-62)    | 89 |
| गुप्त पापों का नाश (श्लोक 63-68)                  | 89 |
| महापापों के नाश का फल (श्लोक 69-72)               | 91 |
| लक्षणा का प्रश्न : प्रत्यक्ष प्रमाण (श्लोक 73-79) | 92 |
| माघ-स्नान और पुण्य-प्रभाव (श्लोक 80-85)           | 94 |
| शोभना कन्या का जीवन-परिवर्तन (श्लोक 86-90)        | 95 |
| व्रत का फल और माघ-स्नान की महिमा (श्लोक 91-96)    | 96 |
| आचमन-विधि और फलश्रुति (श्लोक 97-99)               | 97 |

## **परिशिष्ट . . . . . 99**

|                          |     |
|--------------------------|-----|
| 1. सामग्री-सूचियाँ       | 99  |
| 2. मंत्र-संग्रह          | 100 |
| 3. आरती : ॐ जय जगदीश हरे | 105 |
| 4. क्षमा-प्रार्थना       | 107 |
| 5. प्रश्नोत्तर           | 107 |
| 6. शब्दावली              | 109 |
| 7. पुरानी माप-इकाइयाँ    | 112 |

## **सन्दर्भ-ग्रन्थ . . . . . 114**

## अध्याय 1

# दीपक का आध्यात्मिक महत्त्व : हम दीप क्यों जलाते हैं?

---



मिट्टी का प्रज्वलित दीप

दीपक मिट्टी या धातु का एक छोटा-सा पात्र है, जिसमें घी या तेल और एक बत्ती होती है। पर भारतीय परंपरा में यह छोटा-सा पात्र प्रकाश, ज्ञान, भक्ति और समर्पण — चारों का प्रतीक है। इसीलिए प्रत्येक पूजा, संस्कार और शुभ कार्य का आरंभ दीप-प्रज्वलन से होता है। इस अध्याय में हम सरल उदाहरणों से समझेंगे कि दीप क्यों जलाया जाता है और उसके जलाने से हमारे भीतर और बाहर क्या बदलता है।

## 1. प्रकाश : अंधकार से उजाले की ओर

---

अँधेरे कमरे में एक दीप जलते ही सब कुछ दिखाई देने लगता है — वस्तुएँ वही रहती हैं, केवल अंधकार हट जाता है। उपनिषद् की प्रसिद्ध प्रार्थना इसी भाव को व्यक्त करती है —

असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।

मृत्योर्माऽमृतं गमय ॥

**हिंदी अनुवाद :** मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

**आधार :** बृहदारण्यक उपनिषद् 1.3.28।

## 2. ज्ञान : भीतर का दीप

---

बाहर का अंधकार दीप से मिटता है और भीतर का अंधकार — अज्ञान, भ्रम और भय — ज्ञान से। भगवान् श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि वे अपने भक्तों के हृदय में स्थित होकर ज्ञान के दीप से उनका अंधकार नष्ट करते हैं —

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।

नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥

**हिंदी अनुवाद :** उन पर कृपा करने के लिए ही मैं उनके अंतःकरण में स्थित होकर अज्ञान से उत्पन्न अंधकार को प्रकाशमय ज्ञान-दीप द्वारा नष्ट कर देता हूँ।

**आधार :** श्रीमद्भगवद्गीता 10.11।

एक दीप से दूसरा दीप जलाने पर पहले दीप का प्रकाश घटता नहीं, बल्कि प्रकाश दुगुना हो जाता है। ज्ञान का स्वभाव भी ऐसा ही है — बाँटने से बढ़ता है।

### 3. एकाग्रता : स्थिर लौ, स्थिर मन

---

हवा न हो तो दीप की लौ सीधी और स्थिर रहती है। गीता इसी स्थिर लौ को एकाग्र मन की उपमा बनाती है —

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता ।

योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥

**हिंदी अनुवाद :** जैसे वायुरहित स्थान में रखा दीपक चंचल नहीं होता, वही उपमा आत्मा के ध्यान में लगे हुए संयमित चित्त वाले योगी के मन की कही गई है।

**आधार :** श्रीमद्भगवद्गीता 6.19।

इसलिए पूजा के समय कुछ क्षण दीप की लौ को शांत भाव से देखना स्वयं में एक सरल ध्यान है।

### 4. भक्ति और समर्पण

---

दीप में घी या तेल धीरे-धीरे जलता है और बत्ती स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देती है। यह निःस्वार्थ समर्पण का प्रतीक है। पूजा के पाँच मूल उपचारों — गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य — में दीप अग्नि-तत्त्व का प्रतिनिधि है। मानस-पूजा की परंपरा में इसी भाव से कहा जाता है —

रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि ।

**हिंदी अनुवाद :** ‘रं’ बीज से युक्त, अग्नि-तत्त्वरूप दीप मैं (आपको) दिखाता/दिखाती हूँ।

**आधार :** मानस-पूजा की प्रचलित पूजा-पद्धति।

## 5. दीप-ज्योति को प्रणाम

---

दीप केवल प्रकाश का साधन नहीं, स्वयं परब्रह्म की ज्योति का प्रतीक माना गया है।  
इसीलिए दीप जलाकर उसे प्रणाम करते हुए ये श्लोक बोले जाते हैं —

शुभं करोति कल्याणमारोग्यं धनसम्पदा ।

शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः ।

दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

**हिंदी अनुवाद :** हे दीपज्योति! तुम शुभ और कल्याण करती हो, आरोग्य तथा धन-संपदा देती हो और शत्रु-बुद्धि का नाश करती हो; तुम्हें नमस्कार है। दीप की ज्योति परब्रह्म है, दीप की ज्योति ही जनार्दन है; यह दीप मेरे पापों को हर ले — हे दीपज्योति, तुम्हें नमस्कार है।

**आधार :** परंपरागत दीप-प्रणाम श्लोक (संध्या-दीप के समय घर-घर में प्रचलित)।

**टिप्पणी :** ‘शत्रुबुद्धि’ का अर्थ बाहरी शत्रु से अधिक अपने मन की वैर-बुद्धि समझना उचित है; दीप-ज्योति से प्रार्थना है कि वह हमारे भीतर की द्वेष-भावना को नष्ट करे।

## दीप जलाने से क्या होता है?

---

इस प्रश्न के उत्तर तीन स्तरों पर मिलते हैं। इन्हें अलग-अलग समझना आवश्यक है, ताकि श्रद्धा भी बनी रहे और विवेक भी।

### (क) पौराणिक फलश्रुति — ग्रंथ क्या कहते हैं

- कार्तिक मास में किया गया दीपदान जन्म-भर के पापों को वैसे ही नष्ट करता है, जैसे सूर्योदय अंधकार को। (स्कन्दपुराण, वैष्णवखण्ड, कार्तिकमास-माहात्म्य 7.4-5)
- जो कार्तिक में श्रीविष्णु के लिए आकाशदीप देते हैं, वे यमराज का क्रूर मुख नहीं देखते। (वही, 7.98)
- कार्तिक मास में अपने घर में प्रतिदिन भगवान विष्णु के लिए घी का दीप जलाने वाले को अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। (पद्मपुराण, ब्रह्मखण्ड, अध्याय 3)
- अनजाने में भी भगवान के दीप को प्रज्वलित रखने वाला जीव (कथा का चूहा) पापमुक्त हुआ। (वही; कथा अध्याय 7 में)

ये वचन श्रद्धा को जगाने और सत्कर्म में प्रवृत्त करने वाले हैं। इन्हें भक्ति-भाव से पढ़ें।

### (ख) परंपरागत विश्वास — लोक क्या मानता है

- संध्या के समय घर में दीप जलाने से घर में लक्ष्मी (शुभता) का वास होता है।
- धनतेरस पर यम के लिए दीप देने से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है।
- शनिवार को पीपल के नीचे तेल का दीप जलाने से शनि-पीड़ा शांत होती है।

ऐसे विश्वास पीढ़ियों से चले आ रहे हैं और श्रद्धा का अंग हैं। किंतु किसी रोग, आर्थिक संकट या ग्रह-दोष के निश्चित परिणाम का आश्वासन इनसे नहीं लेना चाहिए।

### (ग) अनुभवजन्य प्रभाव — जो हम स्वयं अनुभव करते हैं

- प्रतिदिन एक निश्चित समय पर दीप जलाने से दिनचर्या में नियमितता आती है।

- लौ पर कुछ क्षण ध्यान टिकाने से मन शांत और एकाग्र होता है।
- संध्या-दीप के समय परिवार का एक साथ बैठकर प्रार्थना करना आपसी स्नेह बढ़ाता है।
- दीप जलाने से पहले स्थान की सफाई और स्नान आदि की आदत स्वच्छता को बढ़ावा देती है।

सार यह है कि दीप जलाना भगवान के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का सबसे सरल साधन है। इसका सबसे बड़ा फल वह प्रकाश है, जो दीप जलाने वाले के मन में जगता है।